क्षेत्रीय सिनेमा की अच्छी फिल्में अब तक पश्चिम बंगाल से ही निकलती आई हैं, जहां सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, मृणाल सेन ने बेहतरीन फिल्में बनाई और बंगाली सिनेमा को नई ऊंचाई पर पहुंचाया, लेकिन अब मलयालम फिल्में भी मुख्य धारा का हिस्सा बन रही हैं।

'शटर' ने उठाए कई सवाल!

■ चेन्नै से गौतमन भास्करन

केरल में बन रही इन फिल्मों के तमिल, कन्नड़, तेलुगू, हिंदी और मराठी संस्करण भी बन रहे हैं। ऐसी ही एक फिल्म जॉय मैथ्यू की 'शटर' है, जिसने बहुत असर छोड़ा है। यह फिल्म अब तक मराठी, तमिल, कन्नड़, तेलुगू और पंजाबी में बन चुकी है और हिंदी में भी बनने की तैयारी है। 'शटर' की कहानी तीन पुरुष और एक औरत के इर्द-गिर्द घूमती है। तीनों ही अलग-अलग रास्ते से चल कर अचानक साथ आ जाते हैं। फिल्म का किरदार सुरा बहुत खास है, जो ऑटो रिक्शा चलाता है। इसे विनय फोर्ट ने निभाया है। सुरा छोटी-छोटी गलतियां करता है, वहीं राशिद (लाल) का किरदार भी कहानी को नया मोड़ देता है।

सुरा की गलतियां उसे मुसीबत में डाल देती हैं। इन दोनों ही किरदार को लेकर फिल्म के डायरेक्टर मनोहरन (श्रीनिवासन) ने खूब मेहनत की है और ऐसे किस्से गढ़े हैं कि फिल्म देखना तो बनता है। कहानी में उस वक्त मोड़ आता है, जब ऑटो रिक्शा में यात्री अपना सूटकेस भूल जाता है। सुरा को याद आता है कि उसने उस यात्री को कहां छोड़ा था। यहीं से वह गलतियां करना शुरू करता है। इसी बीच,

लापरवाह सुरा के चक्कर में उसका दोस्त राशिद भी फंस जाता है, जो खाड़ी देशों का रहने वाला है और कोजिकोड में उसकी बेटी की सगाई में आया है। सुरा और राशिद उस वक्त मुसीबत में फंस जाते हैं, जब वे वेश्या को लेकर गैरेज में जाते हैं। सुरा उन्हें गैरेज में बंद कर शराब लेने चला जाता है और पुलिस उसे धर लेती है।

जॉय की इस फिल्म में मानवीय संबंधों को लेकर जितनी संवेदनाएं उभर कर आती हैं, उससे लगता है कि इन किरदारों पर बहुत सोच-समझ कर कहानी लिखी गई है। अलग-अलग हालात में इन किरदारों की भूमिका से कहानी नए मोड़ लेती है। वेश्या के किरदार में सजीता मदातिल ने अच्छा काम किया है। वह जानवरों की तरह अपने ग्राहक से कातिलाना अंदाज में पेश आती है, लेकिन राशिद के साथ उसकी भूमिका खास है, जब वे मुश्किल में फंस जाते हैं। गैरेज में बंद दोनों वहां से निकलने की कोशिश करते हैं। उधर, सुरा भी परेशान है कि कैसे वह पुलिस से छूटे और उन्हें गैरेज की कैद से मुक्त कराए। जॉय ने जिस खूबी से इस फिल्म को निखारा है, उससे फिल्म सिर्फ गुदगुदाती ही नहीं है, बल्कि रहस्य से भी रूबरू कराती है। अंत तक इसकी कहानी बांधे रखती है। ●